International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 10 Issue 3 Ser. II || March 2021 || PP 71-75

विश्व समस्या के रूप में आतंकबाद

डॉ0 जितेन्द्र बहादुर सिंह
ऐसो0प्रो0 – राजनीति विज्ञान
पं0 राम लखन शुक्ल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
आलापुर, अम्बेडकरनगर, उ0प्र0

वातावरण में अजब सी दहशत है कौन है यह,

जो हमारी रगों में खून नही त्रास दौड़ा जाता है

हमारे मस्तिष्क में विचार नही वायवीय आक्रोश ठूस जाता है

और हम खाली रह जाते हैं।

(कवि राजेन्द्र)

आतंकवाद वर्तमान सदी की अन्तर्राष्ट्रीय समस्या है। यह कमजोर राष्ट्रों को तो प्रभावित कर ही रहा है सयुक्त राष्ट्र अमेरिका जैसे शक्तिशाली राष्ट्र को भी इसने चुनौती दी है। अत्यन्त खतरनाक बात यह है कि पिछले तीन दशक में आतंकवाद ने समेकित रूप से अपने पांव पसारे, लेकिन इसके मार्ग में कोई राष्ट्र विशेष अवरोध उत्पन्न नही कर पाया।

आतंकवाद का इतिहास अत्यन्त पुराना है जब भी कोई व्यक्ति या समूह वर्तमान राजनीतिक, सामाजिक या आर्थिक व्यवस्था से असंतुष्ट होता है या उपेक्षा, अन्याय की भावना से ग्रसित हो जाता है तो वह उसे बदलकर नयी व्यवस्था स्थापित करना चाहता है। जो उसके अनुसार ज्यादा न्याय संगत और अधिक लोगों के लिए लाभकारी हो। इस कार्य में संलग्न लोगों तथा क्रांतिकारी में बुनियादी अन्तर उनके द्वारा लक्ष्य प्राप्ति के तरीकों में है। क्रांतिकारियों को अधिकांश जनता का समर्थन प्राप्त रहता है जबकि आतंकवादियोंको जनता हेय व घृणा की दृष्टि से देखती है। आंतकवादी हिंसक तरीके अपनाते हैं, अतिवादिता के कारण अमानवीय व्यवहार प्रदर्शित करते है। जिससे इन्हे बबर की श्रेणी में रखा जाता है।

आतंकवाद एक तरह का भयादोहन है, जिकी प्रमुख उपयोगिता राजनीतिक व सामाजिक है इसका अर्थ है कि हिंसा का ऐसा प्रयोग जो सैनिक दृष्टि से ही नही बल्कि लक्ष्य को मनोवैज्ञानिक रूप से प्रभावित करें।

आतंकवाद की सर्वमान्य व निश्चित परिभाषा कोई नही है 'ग्रान्ट बोडला' के अनुसार, ''राजनीतिक आतंकवाद किसी व्यक्ति अथवा किसी समूह द्वारा सत्ता के पक्ष अथवा विपक्ष में हिंसा का प्रयोग अथवा हिंसा की धमकी है। मैं आतंकवाद का अभिप्राय उन अपराधिक कृत्यों से है जो किसी राज्य के विरूद्ध उन्मुख हो और जिनका उद्देश्य कुछ खास लोगों तथा सामान्य जनता के मन में भय का आतंक पैदा करना है।''

इनसाइक्लोपीडिया ऑफ सोशल साइसेज में आतंकवाद को निम्न रूप से परिभाषित किया गया है ''यह एक ऐसा तरीका है जिसके द्वारा एक संगठित समूह अथवा बल अपने उद्देश्यों की प्राप्ति मुख्य रूप से हिंसा के योजनाबद्ध तरीकों के उपयोग से करता है''

भारतीय टाडा कानून ने इसे सरकार अथवा लोगों को आतंकित करने के उद्देश्य से बम विस्फोट करने, आग्नेयास्त्रों को उपयोग करने, सम्पतित नष्ट करने रसायन तथा रासायनिक अस्त्र उपयोग करने व आवश्यक सेवाओं में गड़बड़ी करने के उद्देश्य से जो भी कार्य किये जायगें उसे आतंकी कार्यवाही माना है। परल विल्किंशन आतंकवाद की व्यख्या उस नीति अथवा प्रक्रिया के रूप में की है जिसमें मूल तथ्य होते है। (1) आतंकवाद को व्यवस्थित शस्त्र के में प्रयोग करने का

निर्णय (2) सामान्य से अधिक हिंसा, धमकी या हिंसक कृत्य (3) तत्कालिक शिकार और व्यापक राष्ट्रीय अथवा अन्तर्राष्ट्रीय जनमत पर इस हिंसा का प्रभाव।

आतंकवाद का प्राथमिक उद्देश्य राजनीतिक होता है जिसका साधन हिंसा या हिंसा के प्रयोग की धमकी द्वारा जनता में भय का संचार अपने संगठन का प्रचार तथा सरकार पर दबाव डालने हेतु किया जाता है।

आतंकवाद अपने विस्तार के आधार पर राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर देखा जाता है। अनेक राष्ट्रीय आतंकवादी संगठनों का सम्पर्क अन्तर्राष्ट्रीय आतंवादी गुटों के साथ रहता है। जिसके द्वारा इन्हे अनेक नवीन हथियार तथा उपकरण प्रदान किये जाते हैं।

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद स्थानीय युद्धों, जातीय हिंसा, जातीय युद्ध अथवा वित्तीय असमानताओं ने अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था को एक अराजकतापूर्ण व्यवस्था बना दिया। इसके कारण यू0एन0ओ0 की भूमिका सीमित हो गयी। शस्त्रों के हस्तांतरण की नीति ने इसके विस्तार में विशेष सहयोग दिया।

आतंकवाद की प्रवृत्तियों में मुख्यतः पांच कार्य किये जाते हैं। जिसके द्वारा दहशत फैलायी जा सकती है :–

- ❖ हिंसा व हिंसा की धमकी।
- ❖ अपहरण करके उसका प्रचार सूचना माध्यमों द्वारा करना तथा फिरौती की मांग।
- ❖ विस्फोट करके जनता में दहशत फैलाना, जनता का मनोबल गिराना तथा सरकार के प्रति जनता में अविश्वास फैलाना।
- ❖ राजनीतिक हत्यायें करके सरकार को भयभीत करना।
- ❖ तोड़फोड़ करते रहना जिससे विवाद जीवान्त बना रहे।
- ❖ साम्प्रदायिक दंगों को भड़काना।

आतंकवाद की कार्यवाही में छः तत्वा मुख्य रूप से होते हैं –

01. उद्देश्य – जो राजनीतिक होता है, 2. आधार – जो व्यापक होता है, जो किसी भी आतंकवादी कार्यवाही का लक्ष्य बनता है। 3. आतंकवादी कार्यवाही को अंजाम देने के लिए उत्पीड़न या व्यवस्था से त्रस्त समूह की सहायता ली जाती है, जिसे विदेशी समर्थन प्राप्त रहता है। 4. आतंकवादी कार्यवाही के लिए अत्यधिक हिंसा के साधन अपनाये जाते हैं। 5. इसके साथ–साथ सहायक कार्य के रूप में सम्पत्ति का नाश तथा अपहरण आदि कार्यवाहियाँ की जाती हैं। 6. अन्तिम रूप से कार्यवाही का लक्ष्य व्यक्ति या समूह के मस्तिष्क में भय का संचार करना होता है।

आतंकवाद का प्रकार के रूप में सर्वप्रथम सामप्रदायिक आतंकवाद का नाम लिया जाता है। जिसका प्रमुख उद्देश्य किसी धर्म विशेष के लोगों को धर्म के नाम पर भड़का कर आतंकवादी कार्यवाही करना। जैसे भारत में कश्मीर राज्य में फैला पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद, यदि वैश्विक स्तर पर देखा जाय तो वर्तमान में इस्लामिक साम्प्रदायिक आतंकवाद इसका प्रमुख उदाहरण है।

द्वितीय प्रकार के रूप में जातीय आतंकवाद है, जो नस्लीय भेद–भाव पर आधारित है। भारत के बिहार राज्य में अगड़ों वा पिछड़ों के मध्य पीढ़ियों से चला आ रहा संघर्ष, अन्तर्राष्ट्रीय जगत में जर्मनी का नाजी आतंकवाद, पाकिस्तान में शिया व सुन्नी के बीच का संघर्ष इसका उदाहरण है।

तृतीय प्रकार का आतंकवाद वह है जो विचारधारा आधारित है, नक्सलवादी आन्दोलन माओं के दर्शन पर आधारित है जिसका उद्देश्य सामाजिक व आर्थिक न्याय की प्राप्ति है। प्रमुख नक्सलवादी समूहों में बिहार में सक्रिय एम0सी0सी0 आंध्र प्रदेश का पी0डब्लू0जी0 आदि।

चतुर्थ रूप में अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद को चिन्हित किया जा सकता है जिका उद्देश्य अपना राष्ट्र स्थापित करना होता है जैसे – फिलिस्तीन राज्य मांग के लिए यासिर अराफतात का पी0एल0ओ0 आई0आर0ए0 आदि।

भारत में स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में भगत सिंह व अन्य को राष्ट्रवादी आतंकवादी की श्रेणी में रखा जाता था। पॉचवां प्रकार राज्य आतंकवाद है, जिसमें सम्पूर्ण राज्य आतंकवादी कार्यवाही में संलग्न होता तथा कार्यवाही वैश्विक स्तर पर होती है यथा सूडान, लीविया, ईरान, ईराक इत्यादि।

छठवां और अन्तिम प्रकार राज्य पोषित आतंकवाद है। जिसका उद्देश्य आतंकवाद को प्रश्रय देकर शत्रु राष्ट्रों में आतंकवादी कार्यवाहियां करना जैसे भारत के कश्मीर राज्य का आतंकवाद इसका ज्वलंत उदाहरण है।

समसामयिक रूप में आतंकवाद निर्बल राष्ट्रों की शक्तिशाली राष्ट्रों को अशक्त करने की विधा के रूप में उभरा है जिससे उनके द्वारा अन्य राज्यों में प्राक्सीवार (छाया युद्ध) चलाया जा रहा है। समाजवाद एवं पूजीवाद के संघर्ष के चलाते शीत युद्ध के काल में अनेक स्थानों पर विचारधारात्मक आतंकवाद दिखायी पड़ता है। साथ ही आतंकवाद की समाप्ति के लिए भी आतंकवाद का तरीका अपनाया गया है। जैसे अफगानिस्तान ने रूस को पराजित करने के उद्देश्य से अमेरिका ने अफगानों को सहायता दी। मादक द्रव्यों के व्यापार व तस्करी हेतु इसका प्रयोग हो रहा है, जिससे आतंकवाद व्यवसाय का रूप लेता जा रहा है। कही–कहीं आत्म निर्णय के वैध अधिकार हेतु अल्पसंख्यकों की कुंठा के रूप में आतंकवाद उभरा है। जैसे इराक में कुद्र आतंकवाद सत्तारूढ़ दमनात्मक सरकारों व तनाशाहों के विरूद्ध संघर्ष के रूप में भी आतंकवाद दृष्टिगोत्तर होता है, जैसे वर्मा में सैनिक शासन के खिलाफ।

आज राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद का भेद समाप्त होता जा रहा है क्योंकि आतंकवादी संगठनों के मध्य पारस्परिक सहयोग बढ़ रहा है। विश्व में सर्व प्रथम 1997–73 में लैटिन अमेरिकी उग्रवादी संगठनों ने आपस में बैठकर निर्णय लेकर संयुक्त गतिविधि की शुरूवात की थी। आज विभिन्न आतंकवादी संगठनों के मध्य इस तरह का सम्बन्ध आम बात है।

आतंकवाद को जन्म देने के पीछे मुख्य रूप से समाज में फैली शोषण व अन्याय की प्रवृत्तियों जिम्मेदार हैं शोषित वर्ग स्वयं को असहाय समझकर हिंसा का सहारा लेता है। अपनी मांगों को पूरा करने के लिए सत्ता पक्ष द्वारा कोई सहायता न मिलने पर आक्रोश स्वाभाविक रूप से उत्पन्न होता है। सरकार का ध्यान इस पर तब केन्द्रित होता है जब हिंसात्मक गतिविधियां होने लगती है।

बेरोजगारी नवयुवकों में असंतोष पैदा होने का मुख्य कारण है। आज मादक पदार्थों की तस्करी का धंधा आतंकवाद से जुड़कर इसे व्यवसाय बना दिया गया है जिससे रोजगार की तलाश में युवक आतंकवाद से जुड़ रहे हैं। कश्मीर में बेरोजगारी आतंकवाद का प्रमुख कारण है कभी–कभी शासक वर्ग जब जन समस्याओं के प्रति संवेदन शून्यता दिखाता है तो वह आतंकवाद के जन्म में सहायक बनता है। जैसे असम व पंजाब में आतंकवाद उन्ही कारणों से है।

राज्यों के बीच आर्थिक असंतुलन लोगों के बीच हीन भावना लाता है तथा व्यक्ति अपनी स्थिति मजबूत करने के लिए आतंकवाद का सहारा लेते हैं। जैसे बिहार, मध्य प्रदेश उड़ीसा, आन्ध्र प्रदेश में अपनी संस्कृति को बचाने के लिए समूहों द्वारा प्रयास किया जाता है। संस्कृतिक अस्मिता की असुरक्षा का भाव अधिक होते ही समूहों द्वारा हिंसा का सहारा लेकर उसे बचाने का प्रयास किया जाता है। पूर्वोत्तर राज्यों में आतंकवाद इन्ही कारणों से फैला। समाज के बहुसंख्यक वर्ग द्वारा अल्पसंख्यकों पर अत्याचार भी आतंकवाद का प्रमुख कारण है। जैसे –' श्रीलंका में एल0टी0टी0ई0 विदेशों द्वारा अन्य राष्ट्रों में आतंकवाद को प्रायोजित किया जाता है जिससे ये अपनी आन्तरिक समस्याओं में ही उलझे रहें व विकास का आभाव बना रहें और वे अन्य राष्ट्रों पर निर्भर रहें।

आतंकवाद से ग्रसित राज्य जहां प्राक्सीवार (छाया युद्ध) चल रहा है भी इससे निपटने के लिए निरन्तर युद्ध का सहारा ले सकते हैं। जिससे विनाश अत्याधिक मात्रा में सम्भव है आतंकवाद के व्यावसायिक रूप ग्रहण करने से उसको रोक पाना अत्यन्त दुरूह कार्य है। यह विश्व अर्थव्यवस्था के लिए हस्तक्षेप करने वाले राष्ट्र की सम्प्रभुता के लिए खतरा हो सकते है।

आतंकवाद से निपटने के लिए कुछ सकारात्मक व नकारात्मक दोनों ही उपाय करने होगें। सकारात्मक कदमों में बिना हिंसा के प्रयोग द्वारा अर्थात दमनात्मक कार्यवाही न कर शान्तिपूर्ण साधनों का उपयोग किया जाना चाहिए परन्तु आतंकवाद के सम्पूर्ण खात्में के लिए दमन की आवश्यकता होगी।

सकारात्मक कदमों में मुख्यतः सत्ता पक्ष द्वारा राष्ट्र समस्याओं का आम सहमति तैयार करने का प्रयास, जनता के मन में न्याय व कानून के प्रति विस्वास पैदा करना तथा पुलिस व सुरक्षा बलों का आधुनिकीकरण कर उन्हें आतंकवाद से निपटने के लिए विशेष प्रशिक्षण देना आवश्यक है। आतंकवाद प्रभावित क्षेत्रों में आतंकवादियों की पहचान के लिए समाज में व्यापक शोषण को रोक कर सामाजिक आर्थिक न्याय सुनिश्चित करना जरूरी है। इसके साथ–साथ अन्तर्राष्ट्रीय भी सहयोग उनके विश्वव्यापी नेटवर्क को तोड़ने के लिए चाहिए।

अन्य उपायों में :–

- ❖ जनता की सहानुभाति प्राप्त कर उसे आतंकवादियों के विरूद्ध भड़काना।
- ❖ आतंकवादियों की जनता के बीच से अलग पहचान करना।
- ❖ राजनीति व सैन्य दोनों तरीकों का इस्तेमाल करना।
- ❖ आतंकवादियों को बाह्य आपूर्ति बन्द करना।
- ❖ सैन्य व नागरिक क्षेत्र का आपसी सहयोग।
- ❖ विशेष आकस्मिक नियंत्रण संरचना।
- ❖ उत्तम गुप्तचर व्यवस्था।
- ❖ गतिशीलता में उचित प्रशिक्षण।
- ❖ विशेष कमाण्डों का गठन जैसे–जर्मनी में जी0एस0जी0आई0, सयुक्त अरब में एस0ए0एस0, भारत में एन0एस0जी0।
- ❖ यू0एन0ओ0 को ज्यादा अधिकार देकर शक्तिशाली बनाना।

आतंकवाद एक अन्तर्राष्ट्रीय समस्या है जब तक अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इससे निपटने का प्रयास नहीं किया जाता तब तक इससे निपटना कठिन है। इसके लिए आवश्यक है कि विश्व के प्रभावशाली राष्ट्र अपने स्वार्थ से ऊपर उठकर सोचें। प्रत्यपर्ण सन्धियों का विस्तार किया जाय और राष्ट्रों द्वारा उसे ईमानदारी के साथ लागू किया जाय। प्रभावित राष्ट्र संयुक्त रूप से कार्यवाही करें तभी इस समस्या का समाधान निकल सकता है। आतंकवाद को अन्तर्राष्ट्रीय अपराध घोषित किया जाए चाहे उसका उद्देश्य कुछ भी हो।

आतंकवाद के समूल समाप्ति के लिए अनेक प्रयास किये गये यू0एन0ओ0 की तरफ से 1970 के बाद आतंकवाद से निपटने के लिए अनेक प्रस्ताव स्वीकार्य किये गये परन्तु उसका कोई ठोस प्रभाव नहीं निकला। महासभा ने 1972 में राष्ट्रों से एक प्रस्ताव द्वारा आतंकवाद को असफल बनाने की अपील की और कहा की राष्ट्रों का यह दायित्व है कि वे किसी विद्रोही सैन्य समूह को संगठित व प्रोत्साहित न करें तथा किसी देश में भाड़े के सैनिकों की घुसपैठ को सहयोग न दे।

यू0एन0ओ0 ने 1973 में आतंकवाद से निपटने के लिए सुझाव देने के लिए 35 सदस्यीय समिति का गठन किया परन्तु यह शीत युद्ध व राष्ट्रीय हितों के कारण अपने उद्देश्य में असफल रही।

विश्व समुदाय 1973 से 1990 तक अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद, स्वतंत्रता संग्राम, आत्म निर्णय आदि में उलझा रहा। 1994 ई0 में महासभा ने जिसमें सदस्यों ने अपने प्रयासों से आपसी ताल मेल एवं सहयोग का आवहन किया। फरवरी 1998 में आतंकवाद निरोधक अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र महिरा ने सम्मेलन में घोषित किया कि – अन्तर्राष्ट्रीय कार्यवाही उसका लक्ष्य जो भी हो अन्तर्राष्ट्रीय अपराध है। सदस्य राष्ट्र आतंकवादियों को संरक्षण न दें। प्रत्यर्पण सन्धियों को अन्याधिक सुलभ बनाया जाय। अक्टूबर 1999 में सुरक्षा परिषद में सदस्यों से अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद के बढ़ रहें खतरों से निपटने के लिए सहयोग की अपील की ।

विश्व के प्रमुख आतंकवादी संगठनों में अलकायदा– 1 लिट्टे 2 आर्म्ड अबू सय्याक, (मनीला) 3 इस्लामिक ग्रुप (अल्जीरिया) 4. इस्लामी इंकलावी महाज (पाकिस्तान) 5. कलुब्स कलान (अमेरिका) 6. नेशनल लिब्रशन आर्मी (जार्डन मैक्सिको) 7. न्यू पीपुल्स आर्मी (फिलीपीन्स)

पाकिस्तान की सह पर विकसित :–'

1 हरकतउल अन्सार 2. हिजबुल मुजाहिद्दीन 3. अलबुखारा 4. जैश–ए–मुहम्मद

भारत में सक्रिय आतंकवादी गुटों में

जम्मू काश्मीर लिब्रेशन फ्रट, भिंडरा वाले टाईगर्स फोर्स, खलिस्तान टाईगर्स फोर्स, पीपुल्स वार ग्रुप, कुकी नेशनल आर्मी, नागालैण्ड नेशनलिस्ट काउंसिल इत्यादि।

अब आतंकवाद का नया रूप सामने आया है वह है इस्लामिक आतंकवाद। इसका निशाना रूस, भारत, चीन, अमेरिका आदि देश है। यह आतंकवाद इस्लामिक कट्टरपन से उभरा है जो जिहादी जुनून और फौजी संरक्षण के कारण से बदतर होता जा रहा है। इस्लामिक आतंकवाद को जन्म देने में दो घटनाओं का विशेष योगदान है। 1. फिलीस्तीन संकट 2. अफगान संकट।

1980 के दशक में इस्लामिक जिहादी आतंकवाद ने अपना पैर तेजी से पसारना प्रारम्भ किया धर्म निरपेक्ष और गैर इस्लामिक राज्यों में मुस्लिम अधिकारों की रक्षा का दायित्व ग्रहण किया गया। अफगान संकट के समय में यू0एस0ए0 में विभिन्न इस्लामिक संगठनों को प्रशिक्षण धन हथियार देकर सोवियत संघ के खिलाफ प्रेरित किया गया आज उन्ही हथियाहों और प्रशिक्षण का दुपरिणाम दुनिया को झेलना पड़ रहा है। आतंकवाद को खत्म करने के लिए सम्पूर्ण विश्व को समेकित रूप में प्रयास करना होगा।

आतंकवाद के साथ उत्पन्न वर्तमान समय में सबसे प्रमुख समस्या अमेरिका का आतंकवाद के बहाने विश्व पर अपना दबाव बढ़ाना है विश्व मानवता के कल्याण के लिए आतंकवाद के साथ–साथ किसी देश विशेष का वैश्विक दबाव भी समाप्त करने की आवश्यकता, बिना इसके विश्व शान्ति असम्भव है।

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

1. आहूजा राम, आहूजा मुकेश (1998) ''विवेचनात्मक अपराध शास्त्र,'' रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
2. तायल चतुर्वेदी 1988''अर्राष्ट्रीय आतंकवाद और अन्तरर्राष्ट्रीय विधि'', पंचचशील प्रकाशन नई दिल्ली।
3. https//bprd.nic.in
4. http//awaremyindia.in
5. वीरेन्द्र ग्रोवर ''इनसाइक्लोपीडिया ऑफ इंटरनेशनल टेररिज्म, टेररिज्म इन वर्ल्ड कंट्रीज'' वॉल्यूम 2002, दीप एंड दीप पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।

कैटलिन टी, स्ट्रीट ''स्ट्रीमिंग द इंटरनेशनल सिल्वर प्लेटर डॉक्ट्रिन : कोऑर्डिनेटिंग ट्रॉन्सनेशनल ला इनफोर्समेंट इन द एज ऑफ ग्लोबल टेररिज्म एंड टेक्नोलॉजी,'' कोलंबिया जर्नल ऑफ ट्रॉसलेशल ला, 2011, मेजर जनरल विनोद सहगल,, ''अंतरर्राष्ट्रीय आतंकवाद'', 2004, प्रभात प्रकाशन।